अनूप वशिष्ठ की ग़ज़लों का भाषाई वैशिष्ट्य

साहित्य में भाव एवं शिल्प पक्ष दोनों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। किसी रचना की महानता इन दोनों पक्षों पर टिकी होती है। भावाभिव्यक्ति के लिए लेखक को भाषा की समझ होना अत्यन्त जरूरी है। ग़ज़ल की भाषा मुहावरों, प्रतीकों और बिंबों के माध्यम से अर्थों के विस्तृत संसार को उद्घाटित करती है। शब्दमैत्री, पदबंधों की कसावट और प्रवाहमयता ग़ज़ल की भाषा को विशिष्ट बनाते हैं। कौन से भाव के लिए किस प्रकार की भाषा का चपन उपयुक्त रहेगा। यह समझदारी जिस साहित्यकार में जितनी अधिक होती है वह उतना ही बड़ा साहित्यकार होता है साथ ही उसका रचा हुआ भी अन्य किसी दूसरे की अपेक्षा ख़ास और विशिष्ट होता है। इस नजरिए से जब हम समकालीन ग़ज़लों की दुनिया को देखते हैं तो पाते हैं कि इस समकालीन ग़ज़लों की दुनिया में अनूप वशिष्ठ भी एक ऐसे ही ग़ज़लकार हैं जिनको इस बात की बखूबी परख है कि किस भाव के लिए किस प्रकार की भाषा जरूरी है। भाषा के सम्बंध में जरूरी और गैरजरूरी के फ़र्क को अनूप वशिष्ठ भली-भाँति जानते हैं। 'परंपरा और व्यक्तिगत प्रतिभा' नामक लेख में पाश्चात्य आलोचक टी एस एलियट ने कहा कि लेखक को परंपरा का ज्ञान होना चाहिए। अनूप वशिष्ठ के बारे में यह बात कही जा सकती है कि उनको ग़ज़ल परंपरा की मार्मिक समझ है और उसको उन्होंने अपनाया है पर वह परंपरा उनके लिए बोझ नहीं बनी। इस संदर्भ में 'अलाव' पत्रिका' में प्रकाशित आलेख- 'आलोचना की समस्याएँ

और कुछ गजलकार' में पंकज गौतम ने लिखा है- **"परंपरा की गहरी समझ और उसे आत्मसात कर गजल के रचना-संसार में प्रवेश करने वालों में वशिष्ठ अनूप का नाम महत्वपूर्ण है।"**[i] स्वयं को तुलसी, जायसी, रसखान आदि का वारिस कहते हुए वे इसी परम्परा से जुड़े होने और उसके ज्ञान होने का प्रमाण **'छन्द तेरी हँसी का'** नामक ग़ज़ल संग्रह की एक ग़ज़ल के जरिए देते हैं:

"तुलसी के, जायसी के, रसखान के वारिस हैं,

कविता में हम कबीर के ऐलान के वारिस हैं।

हम सीकरी के आगे माथा नहीं झुकाते,

कुम्भन की फ़कीरी के, अभिमान के वारिस हैं।"[ii]

अनूप वशिष्ठ ने परंपरा से बहुत कुछ सीखा है। उससे बहुत कुछ आत्मसात किया है। इस सीखने और आत्मसात करने की प्रकिया ने उन्हें एक तरफ दुष्यंत की परंपरा से जोड़े रखा तो दूसरी तरफ उन्हें अपने समकालीनों में अलग और विशिष्ट बनाए रखा। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर बलराज पाण्डेय ने '**रोशनी की कोपलें** 'नामक ग़ज़ल संग्रह के आरंभ में 6 पृष्ठीय समालोचनात्मक टिप्पणी लिखी है जिसमें बलराज पाण्डेय लिखते हैं कि

"अपनी रचनात्मक क्षमता के बल पर वशिष्ठ अनूप ने हिन्दी गजल के क्षेत्र में एक विशिष्ट पहचान बनाई हैं।... हम सभी जानते हैं कि दुष्यंत

कुमार ने हिन्दी गजल को नयी भाषा दी, नया तेवर दिया, उसे नया आयाम दिया। दुष्यंत कुमार की उस पंरपरा को जिन लोगों ने विकसित किया, उनमें वशिष्ठ अनूप का नाम अग्रणी है। वे अपनी जमीन से जुड़े हुए रचनाकार हैं।"[iii]

परंपरा की समझ और जमीन से जुड़े होने के कारण अनूप वशिष्ठ की भाषिक संरचना दूर देश की प्रतीत नहीं होती है। भाषा को लेकर उनका मानना है कि आदमी जब गैर की भाषा में अपने को व्यक्त करता है तो हकलाता है। वह स्वयं को अपनी भाषा में बेहतरीन ढंग से अभिव्यक्त कर सकता है। यही बात वे गजल की भाषा के संदर्भ में भी मानते हैं। वे कहते हैं कि अपनी भाषा घी शक्कर की तरह होती है अर्थात् उसमें मिठास भी होती है और ताकत भी।

"अपनी भाषा घी शक्कर सी होती है

गैर की भाषा बोलेगा हकलाएगा।"[iv]

अनूप वशिष्ठ शब्दचयन में कोई परहेज़ नहीं करते हैं। उनकी शब्द सम्पदा व्यापक एवं भावानुकाल है। उनके किसी भी भाषा के शब्दों के प्रति उनका कोई पूर्वाग्रह नहीं है। अनूप जी अपनी गजलों में देशज, विदेशज, तद्भव, तत्सम आदि सभी प्रकार के शब्दों का रचनात्मक प्रयोग करते हैं। डॉ रामकुमार सिंह लिखते हैं कि **"शब्द चयन का जैसा वैविध्य वशिष्ठ जी की गजलों में दिखाई पड़ता है वह अन्यत्र कम ही है।"** अपनी गजलों में वे

अंग्रेजी भाषा के शब्दों का चयन इस प्रकार करते हैं कि उससे गजल की धार और चमक बढ़ जाती है। उदाहरण के लिए

"जहाँ बिजली नहीं, कापी किताबें भी नहीं मिलती

हमारे रहनुमा कम्प्यूटरों की बात करते हैं।"[v]

प्रस्तुत उदाहरण में कॉपी, कंप्यूटर अंग्रेजी भाषा के शब्द हैं इसी प्रकार टेलीफोन, मोबाइल, ट्रैक्टरजैसे शब्द भी उनके गजलो में प्रयोग हुए हैं और भी अनेक शब्दों का प्रयोग अनुप्रस्थ जी ने अपनी गजलों में किया है।

अक्सर कहा जाता रहा है और अभी भी कुछ लोग को भ्रम है कि गजल उर्दू प्रधान शब्दावली में होती हैं। लेकिन दुष्यंत के बाद की जो परंपरा हिंदी गजल की दिखाई देती है उसमें यह भ्रम भ्रामक ही साबित होगा क्योंकि उसमें ऐसा कुछ है नहीं। अनूप वशिष्ठ जी अपनी गजलों के लिए उर्दू की जिस शब्दावली का प्रयोग करते हैं वह ऐसी शब्दावली जो आम जनमानस का ख़ूब प्रयोग किया जाता है और इस शब्दावली के कारण उनकी गजलों की पहुंच आम जानता में और बढ़ जाती है। उदाहरण के लिए

"कल गुफ्तगू थी हुस्न और इश्क़ की

भूखी जमात की पुकार आज है गज़ल

....

जुल्म जो सदियों से दरिंदो ने किया है

उस जुल्म के खिलाफ़ अब ऐतराज है गज़ल।"[vi]

उपयुक्त पंक्तियों में गुफ्तगू, हुस्न, इश्क़, जुल्म आदि सब उर्दू के शब्द है पर फिर भी गजल के अर्थ को समझने में कोई शब्द बाधा नहीं बन रहा है। इन शब्दों के अलावा वफा, ईमानदार, कोशिश, किस्मत, इज्ज़त, हसीन, कुदरत, आदि लोकजनमानस के उर्दू शब्द हैं।

अनूप जी की अपनी मातृभाषा भोजपुरी है और उनकी कार्यशाला काशी है। काशी का भाषाई फक्कड़पन और भोजपुरी की मिठास से भरे शब्द भी उनकी गजलों में हमें प्रयोग होते हुए दिखाई देते हैं। ये दोनों चीजे उनकी गजल की भाषा को बहुत उनके समय के दूसरी गजलों से भिन्न और उम्दा बनाती हैं। भोजपुरी माटी के शब्द उनकी गजलों में चार चांद लग रहे होते हैं। आलोचक बलभद्र इस सन्दर्भ में लिखते हैं कि "**भोजपुरी भाषा से उनका जुड़ाव गज़लों को वह देसीयता प्रदान करता है जो अन्यत्र कम ही दिखाई पड़ता है।"**[vii]

खेल खिलौने दूध-भात का आंगन कहां गया?

सुबह शाम की धमा-चौकड़ी, गोली, गुल्ली-डंडा कहां गया

डाल डाल पर ओला- पाती मधुबन कहां गया?

इसके अलावा तत्सम भाषा के शब्दों का प्रयोग अनूप जी अपनी गजलों में खुलकर करते हैं। यह प्रयोग अपना पांडित्य प्रदर्शन के लिए वे नहीं

करते हैं। बल्कि इस प्रयोग जो भाषा निर्मित होती है वह भी शानदार होती है।एक गजल के एक शेर नमूने के रूप में आप देख सकते हैं

स्वाभिमान से जो जीते थे, आज भिखारी जैसे हैं,

संकट में भी क्रूर सियासत, थू ढोंगी हत्यारों पर।

अनूप वशिष्ठ भाषा की एक विशेषता होती है उसकी बिंबात्मकत्ता। गजलों पर भी यह बात लागू होती है। अनूप जी अपनी भाषा में इस शैली का प्रयोग बहुत ही शानदार तरीके से करते हैं। और उनके गजलों को पढ़ते वक्त ऐसा लगता है उसके चित्र आखों पर बन रहे हैं। उदाहरण के लिए

“सर पर भारी बोझ लिये बैदेही पैदल भटक रही,

टूटी चप्पल, दूर है मंज़िल, चलना है तलवारों पर।”

इस गजल में हम अपनी आंखों के सामने दृश्य को बनते हुए देख पा रहे हैं। इस प्रकार के दृश्य उनकी गजलों में भरे हुए हैं। अनूप जी की भाषा की विशेषता यह भी है कि वे गजलों के लिए कहावत और मुहावरों का प्रयोग करते हैं। जिससे उसमें जान आ जाती है। वह एकदम लोग से जुड़ जाती है और उसका जुड़ाव उनकी गजलों को लोकप्रियता प्रदान करता है और उसका प्रभाव भी कहीं ज्यादा होगा।

शहर के होटलों में रोटियों के दाम जब पढ़ता,

मुझे ममता-भरी वो घर की थाली याद आती है।

भाषा में मिथक का प्रयोग जब अनूप जी करते है तब वह कुछ गहरा और विशेष नज़र आता है। इस संदर्भ में अनूप जी और ज्यादा विशिष्ट है क्योंकि वे जिस मिथक को लाते है उससे भाव का शानदार प्रदर्शन होता है। द्रौपदी जैसे मिथक का आज नारी शक्ति को जोड़ने के लिए अचूक उदाहरण हैं.

ज़रूरी हैं कि द्रौपदियाँ स्वयं बाँधे कमर क्योंकि

दुशासन छोड़ दे तो कृष्ण पट ले भाग जायेंगे।

अनूप जी युगानुरूप भाषा का प्रयोग करते हैं। वे उनकी भाषा भाव पर हावी नहीं होती है। वह केवल उसकी वर्धक बनकर ही आती है। क्योंकि अपनी भाषा में जिस प्रकार भी कहावतों, मुहावरों, मिथक, बिंबो और शब्द चयन का प्रयोग करते हैं वह अपने आप में अनुपम और अद्‌वितीय है।इस प्रकार निष्कर्ष रूप में अगर हम कहें तो अनूप जी की भाषा बड़ी ही विशिष्ट और अदिति है उसमें वह सभी गुण विद्‌यमान है जो ग़ज़ल की भाषा में होनी चाहिए यह होते हैं ।समकालीन गजलकारों की भाषा के सामने अनूप जी की क्ष भाषा उन्नीस नहीं बीस ही होगी। यह कहने में यह कहने में अतिश्योक्ति नहीं होगी कि आने वाली पीढ़ी के लिए अनूप जी की क भाषा पथप्रदर्शक का काम करेगी और हमारी नई पीढ़ी को एक गति दिशा प्रदान करेगी जिससे हिंदी गजल परंपरा सशक्त और संपन्न बनेगी।

1 रामकुमार कृषक, अलाव,(सं-रामकुमार कृषक), ग़ज़ल आलोचना विशेषांक,मई-अगस्त, 2015, पृ-143

2 https://padhegaindia.in/product/chhand-teri-hansi-ka/

3 अनूप वशिष्ठ, रोशनी की कोपलें (गजल-संग्रह), उद्भावना प्रकाशन पृष्ठ संख्या 2

4 https://c.pomento.in/poetry/%E0%A4%B5%E0%A4%B6%E0%A4%BF%E0%A4%B7%E0%A5%8D%E0%A4%A0-%E0%A4%85%E0%A4%A8%E0%A5%82%E0%A4%AA-%E0%A4%95%E0%A5%80-%E0%A4%B0%E0%A4%9A%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%8F%E0%A4%81/

5 मसाले फिर जालने का समय है, अनूप वशिष्ठ पृ. 22

6 बंजारे नयन, अनूप वशिष्ठ पृष्ठ 1 उद्भावना प्रकाशन

7 https://pahleebar.blogspot.com/2020/05/blog-post_18.html?m=1